ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-II ISSUE-XI NOV. 2015

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

'समकालीन कहानी में पात्र तथा चरित्र– चित्रण में मिथिलेश्वर का योगदान'

डॉ. अशोक बळी कांबळे
कें• एच•कॉलेज गारगोटी

समकालीन कहानीकारो में पात्र योजना अथवा चरित्र–चित्रण का कहानी मे महत्वपूर्ण स्थान माना है। समकालीन कहानीकारो ने समाज के स्थित सर्वहारा तथा सभी यथार्थ पात्रोंको अंकित करके उनकी विविध चरित्र की विशेषताओं को उजागर किया है। समकालीन पात्र सेठ, साहुकार, शिक्षित, अशिक्षित, मजुर, बनिहार, अध्यापक, ठेकेदार, जमींदार, उच्चवर्गीय, निम्नवर्गीय आदि अनेक विविध पात्रों का चयन हुआ है। दिनेश पालीवाल ने 'अपने अपने जंगल' कहानी में नायक नारायण जंगल मे होनेवाले जानवरों के व्यवहारों और उनके संबंधों का अध्ययन करनेवाला पशुप्रेमी पात्र है। रमेश उपाध्याय का कहानी–संग्रह 'जमी हुई झीलें' या 'शेष इतिहास' की कहानियों के पात्र सामाजिक–आर्थिक स्थिती करते करते जिने का रास्ता खोजते–खोजते टूट जाते है या पलायनवादी हो जाते है, लेकीन सर्वहारा के यही पात्र 'नदी के पुल' संग्रह की कहानियोंमे शोषक वर्ग के विरूदध संघर्ष का रास्ता अख्तियार कर लेते हैं और नई चेतना को जागृत करते हैं। 'राकेश वत्स' की कहानियों के पात्र लढाई को अकेले न लडकर शोषित प्रताडित लोंगो को लेकर एक सशक्त मोर्चा बनाते है। 'समुह गान' का रिक्शावाला वर्गीय चेतना के कारण गोविंदा जैसे खुँखार दादा को भींड द्वारा समाप्त करवा देता है। 'नमिता सिंह' के पात्र यथास्थिती के खिलाफ संघर्ष करते है। प्रगतशिल वैज्ञानिक दर्शन से प्रेरित होकर शोषण मुक्ति के लिए अपनी जुझारू भूमिका निर्वाह करते है। उदा 'मुक्ती' ' परते' आदि ऐसी ही कहानियॉ है। 'इसराल' की कहानियों में मजदूर खेतिहर, किसान छोटे, दर्जी, सैलून का नाई, पाकिटमार, रिक्शावाला, फकीर आदि नायक दिखाए है, जो अर्थ–संघर्ष में जी–खप रहें है। उनकी 'फर्क' आदि कहानियॉ बहूचर्चित है। 'रामदरश मिश्र' के पात्र ग्रामीण जीवन की समस्यांओं को उजागर करते है। 'एक औरत एक जिंदगी' कहानी की नायिका 'भवानी' पीडीत नारी के रूप में दिखाई देती है। 'हिमांशु जोशी के कहानी पात्र बाहय–संघर्ष की कहानी का 'तापस' व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष कराता है। संजीव की कहानियों के पात्र भी सर्वहारा है–उदा. नायक के रूप में जीवन कें पार का मानसिंह,'संतुलन' की जोहराबाई, खलपात्र में कदर का रायसाहब, आदर्श पात्र में 'हिमरेखा' का कपिल तथा प्रतिरोध करनेवाले नारी पात्र भी दिखाए गए है। निश्चित ही पात्र तथ चरित्र–चित्रण में समकालीन कहानीकारों ने विविधांगी, विविधरूपी, उच्च–नीच, गॉव तथ शहर में स्थित सभी प्रकार के समस्याओं से घिरे पात्रों को अपनी कहानी में अंकित किंया हुआ दिखाई देते है।

मिथिलेश्वर की कहानियों के पात्र दु:खी, संघर्षशील, शोषित और उपेक्षित है। कई पात्र ऐसे भी है, जिनके प्रति पाठक के मन में चिढ़ उत्पन्न होती है, सशक्त नारी पात्र, समाज का प्रतिनिधीत्व करनेवाले पात्र, मुख्य पात्रों की सयायता करनेवाले पात्र तथा बाहरी तथा भितरी संकटग्रस्त पात्र भी दिखाए गए है। मिथिलेश्वर की कहानियॉ ग्रामीण परिवेश से जुडने के कारण नगर का प्रभाव ग्राम पर होने के कारण कथानक में सभी पात्र गॉव तथा शहर से जुडें पात्र है।

उनकी 'एक और हत्या' का जगेसर, 'रात अभी बाकी है' का निझावन, 'बहादूर' कहानी का नायक 'बहादूर' आदि कहानियों के पात्र, शोषित तथा उपेक्षित पात्रों के अंतर्गत आर्थिक दृष्टि से विपन्न ग्रामवासियों की दुर्दशा का प्रतिनिधित्व करते है। गॉव से शहर नौकरी तथा मजदुरी करने आए ग्रामीण शहर के शोषण का शिकार होते दिखाई देते है।

'अनुभवहीन', नपुंसक समझौते', तीन चार' जैसी कहानियो मे नायक, शिक्षित, बेकार तथा अनुभवहीन कहे गए है । आज की भ्रष्ट व्यवस्था का यही मुख्य कारण बताया गया है। कहीं–कहीं पात्र पैसे के खातीर अपनी कला तक बेचने को तैयार है।

मिथिलेश्वर ने अपनी कहानियों के माध्यम से जीवन–संघर्ष तथा सामाजिक सडी–गलियो को तोडकर अन्याय और शोषण के विरूद्ध खडे होने का संदेश कई कहानियों मे संघर्षशील पात्रों के माध्यमसे दिया है। उदा. 'मेघना का निर्णय' कहानी की 'मेघना', 'अभी भी' कहानी की नायिका 'फुलिया' आदि।

'पहली घटना', गॉव का मधेसर' 'भोर होने से पहले', 'एक थे प्रो.बी. लाल' आदि कहानियों मे आदर्शवादी पात्र भी दिखाई गए है। उदा. विपीन, मधेसर, बैजु, प्रो. वंशरोपन लाल आदि पात्रों के विलक्षण प्रतिभा शक्ति को उजागर किंया है।

मिथिलेश्वर के अधिकार संपन्न का सत्यनारायण, गृह–प्रवेश का श्रीवास्तव जैसे पात्र अंधविश्वास तथा कर्मकांड का विरोध तथा कर्मकांड का विरोध करनेवाले पात्र है। इसके साथ–साथ नारी जीवन के विविध पक्षो कां चित्रण भी मिलता है। उनकी 'संगिता बॅनर्जी' की बॅनर्जी, 'बाबूजी' कहानी की नृत्यांगना आदि विविध नारी के रूप में मिथिलेश्वर ने अपनी कहानियों द्वारा आदर्श नारी , पीडित नारी, आत्मनिर्भर नारी, बाल–विवाह, विधवा, आधुनिक विचारोंवाली आदि विविधांगी पात्रों का चयन करके अपनी स्तरीयता सिद्ध कर दी है।

निष्कर्ष :

अत: समकालीन कहानीकारोंने समाज के स्थित सर्वहारा तथा सभी यथार्थ पात्रों को अंकित किया है/ कहानियों में पात्रों के द्वारा शोषक वर्ग के विरूद्ध संघर्ष दिखाया गया है। मिथिलेश्वर की कहानियोंका कथानक ग्राम परिवेश से जुडने के कारण सभी पात्र गॉव तथा शहर से जुडे पात्र है।

संदर्भ सूचि :

१) मिथिलेश्वर : बंद रास्तों के बीच इंद्रप्रस्थ प्रकाशन दिली – पृ. ४०
२) मिथिलेश्वर : माटी की महक धरती गॉव की – पृ. ३१
३) मिथिलेश्वर : मेघना का निर्णय – पृ. ५९

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com